भगत कबीर – सबद २

अचरज एक सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहन न जाई ॥

राग सिरिराग, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ९२

अचरज एक सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहन न जाई ॥
सुर नर गण गंध्रब जिन मोहे त्रिभवण मेखुली लाई ॥१॥
राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥
जा की दिसट नाद लिव लागै ॥१॥ रहाउ ॥
भाठी गगन सिंङिआ अर चुंङिआ कनक कलस इक पाइआ ॥
तिस महि धार चुऐ अत निर्मल रस महि रसन चुआइआ ॥२॥
एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥
तीन भवन महि एको जोगी कहहु कवन है राजा ॥३॥
ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कह कबीर रंग राता ॥
अउर दुनी सभ भरम भुलानी मन राम रसाइन माता ॥४॥३॥

सार: खुले मन से सोचना सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा का स्रोत है। यह हमें सृजन के असीम विस्तार को खोज करने में सहायता करता है, जो विविध अनुभवों और अनोखे दृष्टिकोणों से भरा हुआ है। उदाहरण के लिए, आध्यात्मिक ध्वनि के ज्ञान में डूबने से हमारी वास्तविक क्षमता जागृत होती है । यह हमें उस अनंत और सर्वव्यापी चेतना से जोड़ती है जो निरंतर गूंजती रहती है।

अचरज एक सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहन न जाई ॥
धार्मिक विद्वान उस एकता के चमत्कार को सुनते और समझते हैं क्योंकि समझने के लिए इससे अधिक और कुछ नहीं है।

सुर नर गण गंध्रब जिन मोहे त्रिभवण मेखुली लाई ॥१॥
देवता, साधारण लोग, भक्त और संगीतकार उस शक्ति से मोहित हो जाते हैं जो आकाश, पाताल और पृथ्वी को बांध कर साथ रखती है। (१)

राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥
सर्वव्यापी चेतना असीम ऊर्जा है जो लगातार गूंजती है।

जा की दिसट नाद लिव लागै ॥१॥ रहाउ ॥
जब भीतर की अनंत दृष्टि जागती है तब व्यक्ति इस आध्यात्मिक ध्वनि के ज्ञान में डूब जाता है। (१)(विराम)

भाठी गगन सिंङिआ अर चुंङिआ कनक कलस इक पाइआ ॥
आकाश जितना विशाल दृष्टिकोण एक अलौकिक भट्टी के समान है जहां हमारे विचार रूपांतरित होते हैं। तर्कसंगत सोच (सिंघिया) और अंतर्ज्ञान आधारित सोच (चुंगिया) दो नल की तरह हैं, वह मिलकर एक शुद्ध सार बनाते हैं जो स्वर्ण पात्र में इस एकता के सार को सम्मिलित करता है। यह मानव शरीर का प्रतीक है।

तिस महि धार चुऐ अत निर्मल रस महि रसन चुआइआ ॥२॥
मानव चेतना का प्रतिनिधित्व करने वाला स्वर्ण पात्र आध्यात्मिक अमृत की धाराओं से भरा हुआ है, पीने पर जो शाश्वत आनंद देती हैं। (२)

एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥
अनूठी घटना यह है कि निर्माता ने शरीर को सांस धारण करने के लिए एक बर्तन के रूप में बनाया है, जैसे कि एक प्याले में अमृत।

तीन भवन महि एको जोगी कहहु कवन है राजा ॥३॥
तीनों लोकों में केवल एक ही सर्वव्यापी ऊर्जा है तब फिर कोई ख़ुद को ज्ञानी या राजा कैसे कह सकता है? (३)

ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कह कबीर रंग राता ॥
इस गहरे ज्ञान ने मेरे भीतर प्रकाश फैलाया है और कबीर कहते हैं मैं अब एकता के प्रेम में रंगा हुआ हूँ।

अउर दुनी सभ भरम भुलानी मन राम रसाइन माता ॥४॥३॥
बाकी संसार द्वैत के भ्रम में है लेकिन मेरा मन इस सत्य के सार के नशे में मस्त है कि एकता मे ही शाश्वत आनंद का निवास है। (४)(३)

तत्त्व: भगत कबीर कहते हैं कि आत्मा या शुद्ध चेतना में गहराई से उतरने से यह गहरी समझ उजागर होती है कि एक ही ऊर्जा समस्त सृष्टि का आधार है। वह बताते हैं कि इसके अलावा सब कुछ मात्र माया, भ्रम है। इस सत्य के ज्ञान से उनके भीतर संपूर्ण सृष्टि के प्रति गहन प्रेम जागृत हुआ है। वह हमें जीवन के हर पहलू में दिव्यता को पहचानने, उसकी सराहना करने और अस्तित्व की सुंदरता का उत्सव मनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com